International Referred Research Journal, January, 2011. ISSN- 0974-2832 VoL.II *ISSUE-24

शोध पत्र-शिक्षा

# अध्यापक शिक्षा में शोध व शैक्षिक संस्थानों के योगदान का अध्ययन

* डॉ. दिनेश कुमार

* प्रवक्ता, बी. एड. विभाग, राजकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय, कोटद्वार , उत्तराखण्ड

January, 2011

iLrkouk&

अध्यापक शिक्षा की सरंचना से अभिप्राय अध्यापक के गुणों का तार्किक ढंग से व्यवस्थित होना है। इसके अन्तरगत शिक्षण कौशल, शिक्षण उद्देश्य, सामाजिक विकास, वैयक्तिक विकास आदि को रखा जाता है। शिक्षण कौशल, शिक्षण उद्देश्य, शिक्षण की प्रकृति ये तीनों मिलकर अध्यापक शिक्षा की रुपरेखा तैयार करते हैं। प्रत्येक अध्यापक के लिये प्रशिक्षण आवश्यक है। अप्रशिक्षित अध्यापक की तुलना में प्रशिक्षित अध्यापक अधिक प्रभावी सिद्ध होता है।

सूचनाओ का प्रभावी ढंग से छात्रों तक प्रेषण, प्रश्न पूछने के कौशल, स्पष्टीकरण, प्रदर्शन, विषय वस्तु की व्यावस्थापन व्याख्या उनके तर्कपूर्ण श्रृंखलाबद्ध प्रस्तुतीकरण के संचार कौशल पर निर्भर करती है। जो अध्यापक शिक्षा के प्रशिक्षण के द्वारा सम्भव होता है। शिक्षक को प्रशिक्षण देने वाली संस्थाओं को शिक्षा महाविद्यालय (Collage of Education) के नाम से जाना जाता है। विश्वविद्यालयों कालेजों में बी.एड. एवं एम.एड. कक्षाओं की व्यवस्था करने वाली संस्थाओं में शिक्षा विभाग होता है इन शिक्षा विभागों का मुख्य उद्देश्य प्रशिक्षणार्थियों को प्रशिक्षण प्रदान कर प्रभावशाली व गुणात्मक शिक्षक तैयार करना है। कुछ शिक्षण संस्थाओं में छात्रों को शोध कार्य भी कराया जाता है। जहाँ पर शोधार्थी को सुपरवाइजर के माध्यम से शोध करने के लिए मार्गदर्शन देना, समस्या को पहचानना, सम्बन्धित साहित्य का अध्ययन कर शोध हेतु साख्यिकी आकड़ों के आधार पर परिणामों को प्राप्त कर शिक्षा में गुणात्मक विकास किया जाता है।

वह शोध कार्य ही उपयोगी होता है जो छात्रों, शिक्षकों व जिज्ञासु व्यक्तियों के अध्ययन हेतु उपलब्ध हो सके पुस्तकालय में बन्द होकर रहने वाला शोध कार्य सार्थक नही होता है न ही उसकी कोई उपयोगिता है। एक शिक्षक अपने शिक्षा ऋण से तब तक उऋण नही हो सकता जब तक वह छात्रों को शोध कार्य न कराये। शिक्षा से सम्बन्धित नवीनतम समस्यों को पहचान कर उन पर शोध कार्य करते हुए नवाचार के माध्यम द्वारा शिक्षण को प्रभावशाली, गुणात्मक व उपयोगी बनाया जा सकता है। किसी भी उधमगत नैपुण्य की प्राप्ति के लिए दक्षता की प्राप्ति, प्रतिबद्धता का उन्मेंषण एवं श्रेष्ठ प्रदर्शन हेतु सकारात्मक इच्छा का होना आवश्यक है। संकल्पनात्मक, विषयगत, सन्दर्भ निर्भर, सम्प्रेषणात्मक एवं मूल्यांकन प्रबन्धन तथा सहयोगत्मक दक्षता की प्राप्ति के साथ ही प्रतिबद्धता को विकसित करना अध्यापक शिक्षा का ही दायित्व हो जाता है ताकि सफल अध्यापक तैयार हो सके। उत्तम शैक्षिक पृष्ठभूमि सम्पन्न व्यक्तियों को ही शिक्षा के क्षेत्र में प्रवेश दिया जाय। आधुनिक अध्यापक शिक्षा समाजोपयोगी ही नही बल्कि एक युगोपयोगी कुशल अध्यापक को तैयार करने में सहायक होने के कारण महत्वपूर्ण बन चुकी है।अध्यापक को समाज के लिए उदाहरण बनकर कार्य करना होगा।

vuqla/kku dk vFk&

अनुसन्धान के द्वारा उन मौलिक प्रश्नों के उत्तर देने का प्रयास किया जाता है जिनका अभी तक उपलब्ध नही हो सका है। यह एक प्रक्रिया है जिसमें प्रदत्तों के विश्लेषण के आधार पर किसी समस्या का विश्वसनीय समाधान ज्ञात किया जाता है।अनुसन्धान एक व्यवस्थित तथा सुनियोजित प्रक्रिया है। जिसके द्वारा मानवी ज्ञान में वृद्धि की जाती है और मानव जीवन को सुगम और प्रभावी बनाया जाता है।जार्ज जे0 मूले के अनुसार"शैक्षिक समस्याओं के समाधान के लिए व्यवस्थित रुप से बौद्धिक ढंग से वैज्ञानिक विधि के प्रयोग तथा अर्थापन को अनुसन्धान कहते हैं। इसके अन्तर्गत यदि किसी व्यवस्थित अध्ययन के द्वारा शिक्षा में विकास किया जाए तो उसे शैक्षिक अनुसन्धान कहते हैं।

vuqla/kku ds lkiku&

अनुसन्धान की प्रक्रिया में छः सोपानों का अनुसरण किया जाता है।

1.समस्या का चयन करना।(Selection of problem)

2. परिकल्पना का प्रतिवादन करना।(Formulation of hypothesis)

3. शोध का प्रारूप तैयार करना। (Design of Research)

4. प्रदत्तों का संकलन करना। (Collection of Data)

5. सामान्यीकरण तथा निष्कर्षों का प्रतिपादन करना। (Formulation of Generalisation and Conclusions)

'kks/k dk;Z ds izdkj–

शोध कार्यों का मुख्य रुप से दो भागों में बाँटा जा सकता है– 1. मौलिक अनुसंधान (Fundamental Reasearch) 2. क्रियात्मक अनुसंधान (Action Research)शिक्षा के विकास की दृष्टि से दोनो ही प्रकार के शोध कार्यों का महत्व है। परन्तु क्रियात्मक अनुसन्धान को शिक्षण प्रक्रियाओं में सुधार तथा विकास के लिए प्रयुक्त किया जाता है। जबकि मौलिक अनुसन्धान में शोधार्थी के पास स्नातकोत्तर डिग्री, समस्या का रुप व्यापक एवं मौलिक, नये सत्यों व तथ्यों की खोज, उच्च सांख्यिकी प्रविधियों को प्रयुक्त करते हुए निष्कर्ष निकाला जाता है।

f'k{kk esa vuqla/kku dh vko';drk&

शिक्षा भी एक विषय है। एक विषय के अध्ययन के रुप में शिक्षा

में विज्ञान की अपेक्षा तकनीकी गुणों का अधिक समावेश है। इसीलिए शिक्षा में अन्य विज्ञान के उन सभी प्रत्ययों, विधियों और मापनी का प्रयोग किया जा सकता है। जो शैक्षिक समस्याओं के समाधान हेतु सहायक हो। शिक्षा में चरित्र का निर्माण, ज्ञान का परिवर्तन कौशल, योग्यता, रूचि, अभिवृत्ति व्यवसाय के प्रति वचनबद्धता एवं समर्पण की भावना के साथ शोध की बहुत अधिक आवश्यकता है। जिनके द्वारा शिक्षा में गुणात्मक व चतुर्मुखी विकास किया जा सकता है।

fofHkUu laLFkkuks dk 'kk/k gsrq ;ksxnku&

v/;kid f'k{kk foHkkx dk ;ksxnku (Contribution of teacher Education Department) सन् 1966 के बाद अध्यापक शिक्षा विभाग ने अनेक शोध अध्ययनों का आयोजन किया। अध्यापक शिक्षा विभाग द्वारा छात्र शिक्षक का मूल्यांकन तथा आंकलन, सूक्ष्म शिक्षण तथा अनुकरणीय शिक्षण पर प्रयोग किये। सन् 1966–70 के अन्तराल में 12 सेमीनारों का आयोजन कर शिक्षा को नई दृष्टि प्रदान की।

jk"Vªh; v/;kid f'k{kk ifj"kn dk ;ksxnku (Contribution of N.C.T.E.)

सन् 1973 में राष्ट्रीय अध्यापक शिक्षा परिषद की स्थापना हुई। इसने अध्यापक शिक्षा के लिए पाठ्यक्रम का विकास किया। इसमें मूल्यांकन हेतु नवीन संस्तुतियों के साथ शिक्षा को एक नई दिशा प्रदान की। अध्यापक शिक्षा में नवीन अभ्यास तथा अपाम सूक्ष्म शिक्षण, अनुकरणीय शिक्षण, अन्तक्रिया विश्लेषण तथा प्रष्टपोषण प्राविधियों का प्रयोग किया जाने लगा है। इन आयामों का शिक्षा विभाग द्वारा अनुकरण किया जा रहा है।

bXuw ¼IGNOU½

इन्दिरा गाँधी ओपन विश्वविधालय को सन् 1985 में संसद के एक अधिनियम द्वारा बनाया गया। इग्नू राष्ट्रीय व अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर शिक्षा का प्रसार तेजी से किया जा रहा है। आज इग्नू के द्वारा बी0एड0, एम0एड0 व शोध कार्य करा कर शिक्षा व अध्यापक शिक्षा के विकास में योगदान किया जा रहा है।

;w-th-lh-¼University Grant Commision½

विश्वविद्यालय अनुदान आयोग की स्थापना का उद्देश्य उच्च शिक्षा के क्षेत्र में केन्द्र एवं राज्य विश्वविद्यालय की आवश्यकताओं की पूर्ति के लिये की गई थी। इस संस्था का महत्व न केवल अध्यापक शिक्षा बल्कि उच्च शिक्षा के प्रत्येक स्तर पर विकास कार्यों के लिये जाना जाता है। 28 दिसम्बर सन् 1953 को इसकी स्थापना की गई। सन् 1956 को संसद के अधिनियम द्वारा इसको संवैधानिक दर्जा प्राप्त हो गया। यू.जी.सी द्वारा वर्ष में दो बार नेट (NET) परीक्षा माह जून व दिसम्बर में आयोजित की जाती है। जिसमें 28 वर्ष से कम आयू के व्यक्ति जे.आर.एफ. व उपरी आयू के व्यक्ति लेक्चरर के लिए पात्र होते हैं। जे.आर.एफ. उत्तीर्ण छात्रों को शोध कार्यों हेतु विज्ञान वर्ग में रू0 12000 (बारह हजार रूपये) व कला वर्ग में रू010000 (दस हजार रूपये) प्रति माह प्रदान कर शोध हेतु प्रोत्साहित किया जा रहा है।

jk"Vªh; 'kSf{kd vuqla/kku vkSj izf'k{k.k ifj"kn ¼N.C.E.R.T.½&

वर्ष 1961–66 में स्वायत्तशासी इकाई के रुप में शिक्षा के क्षेत्र में एक केन्द्रिय अभिकरण को मूर्त रुप देने के लिये इस परिषद की स्थापना हुई। इसका मुख्यालय नई दिल्ली में है। एन0सी0ई0आर0टी0 के अन्तरगत चार क्षेत्रिय शिक्षा संस्थान अजमेर, भोपाल, मैसूर, भुवनेश्वर, शिक्षा, अध्यापक शिक्षा व शोध के क्षेत्र में महत्वपूर्ण भूमिका अदा कर रहे हैं। एन0सी0ई0आर0टी0 द्वारा पूर्व प्राथमिक स्तर से लेकर उच्च स्तर के छात्रों के लिये पाठ्यक्रम तैयार किया जाता है। शोधार्थी ने अध्यापक शिक्षा, अध्यापक प्रशिक्षण, शोध कार्य, शैक्षिक संस्थानों के शिक्षा में विकास के योगदान व सुधार को जानने हेतु बी0एड0 प्रशिक्षण प्राप्त कर रहे राजकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय कोटद्वार उत्तराखण्ड से 100 छात्रों का चयन कर समूह बनाकर साक्षात्कार के आधार पर उनके विचार जाने।

mís';&

अध्यापक शिक्षा व शोध के विकास में प्रशिक्षण संस्थानों के योगदान ज्ञात करना।

ifjdYiuk&

प्रत्येक अध्यापक शिक्षण संस्थानों में प्रशिक्षण व शोध कार्य सम्पन्न कराया जाता है।

tula[;k ,oa U;kn'k&

राजकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय कोटद्वार उत्तराखण्ड में बी0एड0 प्रशिक्षण प्राप्त कर रहे 100 प्रशिक्षणार्थियों को शोध हेतु चयन किया।

fof/k&

साक्षात्कार पद्धति।

fu"d"k&

82 प्रतिशत शिक्षक प्रशिक्षणार्थियों ने माना कि अध्यापक प्रशिक्षण संस्थाओं की संख्या में बहुत तेजी से बढ़ोतरी हो रही है। जिससे बेरोजगारी की समस्या पैदा हो रही हैं तथा गुणात्मक शिक्षा में बढ़ोतरी नही हो रही है। 63 प्रतिशत शिक्षक प्रशिक्षणार्थियों ने माना कि अध्यापकों का वेतन बहुत कम है। जिसके कारण वे पूरी तनमयता के साथ शिक्षण कार्य नही करते हैं। शिक्षकों की कर्तव्यनिष्ठा व समर्पण की भावना में कमी पाई गई।

57 प्रतिशत शिक्षक प्रशिक्षणार्थियों ने माना कि प्रशिक्षण संस्थाओं में प्रशिक्षित अध्यापक मानक से कम हैं। जिसके कारण कक्षायें नियमित/समय सारिणी के अनुसार नही चलती हैं। 54 प्रतिशत शिक्षक प्रशिक्षणार्थियों ने माना कि प्रशिक्षण संस्थाओं में शिक्षण सामग्री, खेलकूद सामग्री व प्रयोगशाला की कमी है।

52 प्रतिशत शिक्षक प्रशिक्षणार्थियों ने माना कि प्रशिक्षण संस्थाओं में क्रियात्मक शोध नहीं कराये जाते हैं। 50 प्रतिशत शिक्षक प्रशिक्षणार्थियों ने माना कि प्रशिक्षण संस्थाओं में व्यावहारिक पाठ्यक्रम की अपेक्षा सैदान्तिक पाठ्यक्रम पर अधिक बल दिया जाता है।

48 प्रतिशत शिक्षक प्रशिक्षणार्थियों ने माना कि प्रशिक्षण संस्थाओं में शोध कार्य परिणाम शिक्षण प्रशिक्षणार्थियों को अध्ययन हेतु उपलब्ध नही हो पाते हैं। जिसके कारण वे नये ज्ञान से वंचित रह जाते हैं। 47 प्रतिशत शिक्षक प्रशिक्षणार्थियों ने माना कि विभिन्न